विश्व वन्यप्राणी दिवस 03 मार्च 2017

Photograph by Rohit Bhoraskar

Photograph by Sarosh Lodhi

Photograph by Sarthak Jha

Photograph by Sarosh Lodhi

Photograph by Varun Thakkar

Photograph by David Raju

MADHYA PRADESH FOREST DEPARTMENT
Satpura Bhawan, Bhopal - 462004
mpforest.gov.in

Year 01, Vol. 02, JANUARY-MARCH, 2017

मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

वर्ष 01, अंक 02, जनवरी–मार्च, 2017

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

MADHYA PRADESH VANANCHAL SANDESH

Jabalpur, Madhya Pradesh

Photo : Deepansh Mishra

वनों का विनाश रोकें, इन्हें आग से बचाएं

वनों में आग लगने के कारण

- किसानों द्वारा फसलों के अवशेष को जलाने के लिए लगाई आग का अन्य क्षेत्रों में फैलना।
- जंगलो में से गुजरते समय जली हुई बीड़ी-सिगरेट के टुकड़े फेंकने से।
- कुछ लोगों द्वारा भूमि पर अवैध कब्जा करने की नीयत से लगाई गई आग।
- शरारती तत्वों द्वारा जानबूझकर लगाई गई आग।
- चरवाहों द्वारा लापरवाही से जलाई गई आग।
- अवैध कटान को छिपाने के लिए लगाई गई आग।
- आपसी रंजिश में लगाई गई आग।
- अवैध शिकार की नियत से वन्य जंतुओं को भगाने के लिए लगाई गई आग।

सावधानियाँ एवं उपाय

- किसान फसलों के अवशेष खेतों में न जलाए बल्कि हैरों करके उनको खेत में दबाएं।
- यदि कोई व्यक्ति आग लगाने की कोशिश करता है तो उसे समझाए।
- यदि आप वन में या वन के निकट आग लगी देखें तो हरी टहनियों से पीटकर आग को बुझाएं, निकटतम पुलिस चौकी या वन चौकी पर सूचना देवें।
- अनजाने में सुलगती बीड़ी, सिगरेट और माचिस की तीली वन क्षेत्र में न फेंकें। कभी भी अच्छी घास के लिए जंगल में आग न लगाए। समय रहते हुए फायर लाईन बनाकर या फायर लाईनों की सफाई करें।
- सामान्य जन को शिक्षित करें व उनका विश्वास जीतें।
- वन समितियों व ग्राम सभाओं के सहयोग से आग लगने के कारणों पर रोक लगाए।

मध्यप्रदेश शासन वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

वर्ष 01, अंक 02, जनवरी–मार्च, 2017

MADHYA PRADESH VANANCHAL SANDESH

Year 01, Vol. 02, JANUARY-MARCH, 2017

Patron :
Dr. Animesha Shukla
Principal Chief Conservator of Forests (HOFF), Satpura Bhawan, Bhopal

Editorial Board :
Shahbaz Ahmad
Principal Chief Conservator of Forests (Research, Extension and Lok Vaniki)

Y. Satyam
Additional Principal Chief Conservator of Forests (Development)

Sudhir Kumar
Additional Principal Chief Conservator of Forests (JFM)

Alok Kumar
Additional Principal Chief Conservator of Forests (Wildlife)

Dr. Abhay Kumar Patil
Additional Principal Chief Conservator of Forests (Research, Extension and Lok Vaniki)

Sameeta Rajora
Chief Conservator of Forests

(Director, Van Vihar)

B.K. Dhar
Prachar Adhikari

Editor :
Sameeta Rajora, CCF

Prachar Prasar Prakosth Team :
S.P. Jain, DCF
Rohan Saini

Contact :
Prachar Prasar Prakosth, Room no. 140, Satpura Bhawan, Bhopal
Email : dcfpracharprasar@mp.gov.in
Contact : 07552524293

Published by :
Prachar Prasar Prakosth

BEE FALL PACHMARHI

The views expressed in various articles belong to the authors of the article. Madhya Pradesh Forest Department may not agree with the views expressed by authors and will not be responsible for the correctness of the article. Madhya Forest Department is not responsible for any liability arising out of context/text of the article published in this magazine.

No part of this magazine can be reproduced and published without the consent of the publisher of Madhya Pradesh Vananchal Sandesh. All legal disputes will come under the jurisdiction of Bhopal, Madhya Pradesh

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

अंक द्वितीय, जनवरी–मार्च, 2017

विषय सूची

1. **भोपाल में मुख्य वन संरक्षक सम्मेलन का आयोजन** 1
2. **दीनदयाल वनांचल सेवा** 3
3. **नर्मदा सेवा यात्रा के बढ़ते कदम** 6
4. **अनुभूति कार्यक्रम** 8
5. **वन मेले** 9
   - मध्यप्रदेश लघु वनोपज संघ के द्वारा मालवा वन मेला का आयोजन
   - ग्वालियर वन मेला
6. **विश्व वानिकी दिवस** 10
7. **''जल–वन–नर्मदा–भोपाल'' जन जागरूकता अभियान** 11
8. **वन विहार की गतिविधियाँ** 14
   - वन विहार से वाइल्ड बोर का सफल स्थानांतरण
   - दो मादा बाघ का वन विहार आगमन
   - वन विहार में पक्षी दर्शन
9. **नवाचार** 16
   - कान्हा में पक्षी सर्वेक्षण
   - पेंच टाइगर रिजर्व से चीतल स्थानांतरण कार्य
   - साल बीज से साल वृक्षों का पुनुरूत्पादन
   - People's Health Care in Kanha Tiger Reserve
10. **विविधा** 19
    - संकल्प वन मेले का आयोजन
    - विभागीय गतिविधियाँ
    - अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सिवनी एवं छिंदवाड़ा वन मण्डल में संगोष्ठी
    - मध्य प्रदेश ईको टूरिज्म बोर्ड द्वारा आयोजित अतिथि सत्कार का प्रशिक्षण
    - कृषि वानिकी से कृषक समृद्धि योजना पर पुस्तिका का प्रकाशन
    - 23वीं अखिल भारतीय वन खेल कूद प्रतियोगिता
    - वन्यप्राणी जागरूकता
    - Wildlife Wonders of Madhya Pradesh Photography Contest
    - पचमढ़ी में एक शाम जंगल के नाम
    - An evening with JUNGLEWALAHS in Kanha Tiger Reserve
    - Infamous Wildlife Trader Arrested in Kanpur
    - जॉनी नहीं रहा
11. **प्रशंसा एंव पारितोषक** 28
    - कृषि वानिकी गणतंत्र दिवस के अवसर पर वन एवं वन्य प्राणी संरक्षण और विकास में सराहनीय योगदान के लिये सहायक लोक अभियोजन अधिकारी व 20 वनकर्मी सम्मानित
    - स्व. जोहनलाल नामदेव को मरणोपरांत पुरस्कार
    - गणतंत्रता दिवस 2017 में वन विभाग की झांकी को मिला पुरस्कार
    - क्षेत्रीय सशक्त समिति में सेवा निवृत अधिकारी श्री सुदेश वाघमरे का चयन
    - अखिल भारतीय सिविल सर्विस प्रतियोगिता में वन कर्मी पुरस्कृत
12. **अखबारों के आईने में** 30
13. **हरित साहित्य** 34
    - गौरैय्या
    - चलें प्रकृति की ओर...
14. **Ecotourism** 36
    - एडवेंचर स्पोट्स एवं मनोरंजन का अद्वितीय स्थल
    - मढ़ई का नया आकर्षण
    - Ecotourism Site in Mhow
    - Madhya Pradesh to be the new attraction for Bikers
    - वनक्षेत्र में रॉक पेंटिंग शेल्टर
15. **Promotions and Retirements** 40

सम्पादकीय

भारत के हृदय स्थल के रूप में स्थित मध्यप्रदेश प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता विशेषकर वन एवं वन्यप्राणियों की विविधता के लिये जाना जाता है। वनों के आस-पास रहने वाले आदिवासी एवं अन्य ग्रामीण जनता का बहुत बढ़ा भाग वनों पर निर्भर है, और वन विभाग का प्रमुख दायित्व वनों का वैज्ञानिक दृष्टि से इस तरह प्रबंधन करना है कि न सिर्फ ग्रामवासियों को वनों से यथासंभव जीविकोपार्जन के स्त्रोत निरंतर मिलते रहे, बल्कि प्रबंधन में उनकी भागीदारी भी सशक्त हो और वन एक प्राकृतिक धरोहर के रूप में संवहनीय, संरक्षित एवं संवर्धित संसाधन के रूप में विकसित होते रहे।

यह अंक मध्यप्रदेश वन विभाग के माह जनवरी से मार्च तक की गतिविधियों पर आधारित झलक प्रस्तुत करने का एक विनीत प्रयास है। एक ओर जहॉं मुख्य वन संरक्षक सम्मेलन में वरिष्ठ वनाधिकारियों द्वारा विचार मंथन कर भविष्य की रणनीति बनाई गई, वहीं माननीय वन मंत्री ने वन विभाग की भूरि-भूरि प्रशंसा की, मुख्य सचिव, म.प्र. शासन द्वारा विभागीय अधिकारियों को सकारात्मक कार्य करने की प्रेरणा दी गई और पुलिस महानिदेशक ने वन अपराधों की विवेचना एवं रोकथाम में पूर्ण सहयोग देने की बात कही।

यह समय अग्नि सुरक्षा, वन्यप्राणियों के लिये जल एवं रहवास प्रबंधन, तेन्दुपत्ता शाखकर्तन इत्यादि गतिविधियों के क्रियान्वयन व जागरूकता बढ़ाने का रहा। तेन्दुपत्ता शाखकर्तन का कार्य फरवरी-मार्च के माह में किया जाता है, जिसके लगभग 45 दिन बाद पत्ता संग्रहण का कार्य प्रारंभ होता है। मध्य प्रदेश देश में सर्वाधिक तेन्दुपत्ता उत्पादन (देश का करीबन 25 प्रतिशत) के लिए जाना जाता है।

स्वास्थ्य विभाग की मदद से तीन जिलों डिंडोरी, बैतूल एवं मण्डला के प्रत्येक विकास खण्ड में दीनदयाल वनांचल सेवा के पायलट प्रोजेक्ट के तहत कैंप लगाये गये जिसमें सुदूर वनांचलों की गर्भवती महिलाओं को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाते हुये "Maternal Mortality Ratio" कम करने की ओर सफल एवं अभूतपूर्व प्रयास किये गये। माननीय मंत्री, वन ने तीनों जिलों के कैंपों में स्वयं रहकर वनाधिकारियों एवं कर्मचारियों का मनोबल बढ़ाया और ग्रामीणों में स्वस्थ वन एवं स्वस्थ जन की अहमियत का संदेश दिया। वनमंडल इंदौर ने चोरल रेंज में 80 कुपोषित बच्चों को गोद लेकर लघुवनोपज संघ के ''ग्रोविट उत्पाद'' व मालिश का तेल देकर महिला बाल विकास विभाग के द्वारा किये जा रहे प्रयासों में सहयोग प्रदान किया ।

वन विहार में जहाँ दो बाघ लाए गये, पक्षी दर्शन के कैंप हुये वहीं कान्हा में पक्षी सर्वेक्षण हुआ। चीतल स्थानांतरण का कार्य कान्हा और पेंच टाईगर रिजर्व द्वारा किया गया। मध्यप्रदेश वन्यप्राणियों के सक्रिय प्रबंधन में अग्रणी सिध्द हो रहा है। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में नेत्रहीन बच्चों को वनों की अनुभूति देना एक अभिनव व प्रशंसनीय प्रयास रहा।

नर्मदा सेवा यात्रा में वन विभाग अग्रणी होकर माननीय मुख्य मंत्री एवं वन मंत्री के वृक्षारोपण के सपने को साकार करने में जुटा हुआ है। निश्चय ही क्षेत्रीय वनाधिकारियों का समर्पित, समन्वित प्रयास और मुख्यालय से दक्ष मार्गदर्शन हर कदम पर विभागीय प्रयासों को सफल बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

अगामी विभागीय गतिविधियों के सफल आयोजनों के लिए शुभ कामनाओं सहित।

समीता राजोरा

भोपाल में मुख्य वन संरक्षक सम्मेलन का आयोजन

वन्य-जीवों की बेहतर सुरक्षा के लिये संरक्षित क्षेत्रों के कॉरीडोर को सुदृढ़ करने पर जोर

वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार ने प्रशासन अकादमी में दो दिवसीय मुख्य वन संरक्षक सम्मेलन का दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया

13 एवं 14 फरवरी 2017 को आर.सी.वी.पी नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधकीय अकादमी, भोपाल में दो दिवसीय मुख्य वन संरक्षक सम्मेलन का आयेजन किया गया जिसका शुभारंभ माननीय वन मंत्री मध्यप्रदेश शासन, डॉ. गौरीशंकर शेजवार के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस मौके पर वन विकास निगम के अध्यक्ष श्री गुरूप्रसाद शर्मा, राज्य लघु वनोपज संघ के अध्यक्ष श्री महेश कोरी, वन विभाग के अपर मुख्य सचिव, श्री दीपक खाण्डेकर, वन बल प्रमुख, डॉ. अनिमेष शुक्ला तथा सभी वृत्तों के मुख्य वन संरक्षक उपस्थित थे। वन मंत्री ने अपने सम्बोधन में वन्य जीवों की सुरक्षा को अधिक प्रभावी बनाने और मानव वन्य जीव द्वंद को कम करने के लिये संरक्षित क्षेत्रों के बीच बने कॉरीडोर को सुदृढ़ करने पर जोर दिया।

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश पत्रिका का विमोचन

वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार ने प्रशासन अकादमी में दो दिवसीय मुख्य वन संरक्षक सम्मेलन में मध्यप्रदेश वनांचल संदेश पत्रिका का विमोचन किया

विभाग की गतिविधियों को लोगों तक पहुचानें के लिए एक प्रचार प्रसार कक्ष का गठन किया गया है। इस प्रकोष्ठ के द्वारा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका मध्यप्रदेश वनांचल संदेश के पहले अंक का वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार ने विमोचन किया। मध्यप्रदेश वनांचल संदेश पत्रिका को विभाग की बेबसाइट mpforest.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं।

अपर मुख्य सचिव, वन श्री दीपक खाण्डेकर
उद्‌बोधन देते हुए।

वन बल प्रमुख डॉ. अनिमेष शुक्ला
उद्‌बोधन देते हुए

पुलिस महानिदेशक श्री ऋषि कुमार शुक्ला
उद्‌बोधन देते हुए

श्री जव्वाद हसन (प्रबंध संचालक, राज्य लघु वनोपज
संघ) दूसरे दिन के प्रथम सत्र में उद्‌बोधन देते हुए

श्री बी.पी. सिंह, मुख्य सचिव

पहले दिन के प्रथम सत्र की गतिविधियाँ

- श्री एम. के. सप्रा प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान एवं प्रशिक्षण) की अध्यक्षता में वन एवं वन्य प्राणी सुरक्षा विषय पर चर्चा की गई जिसमें वर्तमान परिदृश्य, विभागीय निर्देश, अतिक्रमण के रोकथाम में समस्याएं, अतिक्रमण निरोधी योजना आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया।
- पुलिस महानिदेशक श्री ऋषि कुमार शुक्ला ने आश्वस्त किया कि पुलिस विभाग वन अपराधों के नियंत्रण में वन विभाग को पूरा सहयोग करेगा।

पहले दिन के द्वितीय सत्र की गतिविधियाँ

- श्री रवि श्रीवास्तव (प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य वन विकास निगम) की अध्यक्षता मे वन्य प्राणी विषय के अंतर्गत रेस्क्यू एवं पुनर्वास बिंदओं पर प्रस्तुतीकरण।
- श्री जितेन्द्र अग्रवाल (प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन्य प्राणी) की अध्यक्षता में ईको टुरिज्म विषय पर प्रस्तुतीकरण।
- श्री एल. के चौधरी (प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना) की अध्यक्षता कार्य आयोजना क्रियान्वयन पर प्रस्तुतीकरण।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र की गतिविधियाँ

- श्री जव्वाद हसन (प्रबंध संचालक, राज्य लघु वनोपज संघ) की अध्यक्षता में जन समुदाय केन्द्रित गतिविधियों एवं दीनदयाल वनांचल सेवा पर प्रस्तुतीकरण।
- श्री पी. के. चौधरी (प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कैम्पा) की अध्यक्षता में वृक्षारोपण विषय के विभिन्न आयामों पर प्रस्तुतीकरण।
- श्री जितेन्द्र अग्रवाल (प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन्य प्राणी) की अध्यक्षता में उच्च गुणवत्ता का तेंदूपत्ता संग्रहण विषय में शाखकर्तन प्रशिक्षण, संग्रहण केंद्र पर कार्य एवं अन्य संबंधित बिंदुओं पर प्रस्तुतीकरण।

दूसरे दिन के द्वितीय सत्र की गतिविधियाँ

- श्री शाहबाज़ अहमद (प्रधान मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान विस्तार एवं लोक वानिकी) की अध्यक्षता में विस्तार वानिकी एवं कृषि वानिकी को बढ़ावा देने के विषय में विभिन्न योजनाओं पर प्रस्तुतीकरण।

  डॉ. आर. के. गुप्ता (प्रधान मुख्य वन संरक्षक, उत्पादन) की अध्यक्षता में वनविभाग द्वारा किये गये नवाचार विषय पर प्रस्तुतीकरण।

दीनदयाल वनांचल सेवा

स्वस्थ जन-स्वस्थ वन की ओर बढ़ते कदम

डॉ. किरण शेजवार दीनदयाल वनांचल सेवा के कार्यक्रम में ग्रामीणों को संबोधित करते हुए

दीनदयाल वनांचल सेवा एक नवाचार पूर्ण अभिनव योजना है, जिसमें सुदूर वनांचलों में निवासरत ग्रामीणों विशेषकर वनवासियों के स्वास्थ्य, शिक्षा, कुपोषण आदि समस्याओं के निराकरण में वन विभाग द्वारा सेवाभाव से सहयोग प्रदान किया जा रहा है। दीनदयाल वनांचल सेवा का शुभारंभ 20 अक्टूबर 2016 को माननीय मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश शासन, श्री शिवराज सिंह चौहान के करकमलों द्वारा किया गया।

राज्य सरकार के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग व आदिम जाति कल्याण विभाग के साथ मिलकर **''दीनदयाल वनांचल सेवा''** को प्रदेश के सभी वन परिक्षेत्रों में क्रियान्वित किया जा रहा है। इस योजना के माध्यम से प्रदेश के सुदूर वनांचलों में स्वास्थ्य, पोषण तथा शिक्षा का अधिकतम लाभ ग्रामीणों को उपलब्ध कराने का वन विभाग द्वारा एक सराहनीय प्रयास किया गया है। इस योजना के तहत स्वास्थय शिविरों का आयोजन किया गया जिसमें कुल 35908 ग्रामीणों में 22541 महिलाएँ, 4914 गर्भवती महिलाएँ एवं 5437 बच्चें लाभांवित हुए। विभाग द्वारा जमीनी स्तर पर दीनदयाल वनांचल सेवा को बेहतर ढंग से लागू करने के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर वनकर्मियों को स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित विशेष प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया।

इस योजना ने बहुत कम समय मे अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त की है। डिंडोरी, बैतूल एवं मण्डला जिले के वन परिक्षेत्रों में इस योजना ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है।

पॉयलेट प्रोजेक्ट में डिंडोरी, बैतूल एवं मण्डला जिले में सम्पन्न किये गये स्वास्थ्य शिविरों की उपलब्धियाँ निम्नानुसार है-

दीनदयाल वनांचल सेवा में की उपलब्धियाँ					
क्र.	उपलब्धियों का विवरण	वनमंडल			
		डिण्डोरी 28.01.17	मण्डला 26.03.17	बैतूल 05.03.17	योग
1.	कुल स्वास्थ्य शिविर	7	9	10	26
2.	वनग्रामों की संख्या	86	59	78	223
3.	कुल पंजीकृत मरीजों की संख्या	2638	3102	3,984	9724
4.	हाई रिस्क गर्भवती महिलाओं की संख्या	280	522	746	1548
5.	गंभीर ऐनीमिया के प्रकरण	72	9	197	278
6.	वनग्रामों से शिविर में उपस्थित महिलाऐं	438	226	307	971
7.	कुल उपस्थित चिकित्सकों की संख्या	36	42	51	129

अन्य 185 स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से 4914 मरीजों का परीक्षण किया गया जिनमें 3286 गर्भवती महिलाए व 267 हाईरिस्क गर्भवती महिलाओं की जाँच, 308 कुपोषित मरीजों की पहचान एवं जाँच, 162 मरीजों को बड़े अस्पताल रेफर किया गया, तथा 891 मरीजों की हिमोग्लोबिन की जाँच कराई गई।

स्कूल एवं शिक्षा विभाग के अन्तर्गत विभिन्न वनमंडलों में रिसोर्स पर्सन का चयन किया गया है जो वनांचलों के स्कूलों एवं छात्रावासों में विभिन्न विषयों में छात्र-छात्राओं को अध्ययन कराने एवं वनों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में प्रयासरत है। आदिम जाति कल्याण विभाग की योजना अनुसार 42 आंगनवाड़ीयों का निर्माण वन विभाग द्वारा किया जा रहा है। 274 स्वास्थ्य उन्मुखीकरण प्रशिक्षण शिविरों में 8000 से अधिक वनकर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया। दीनदयाल वनांचल सेवा के अन्तर्गत सभी वनमंडलों एवं राष्ट्रीय उद्यानों को 20 प्रतिशत लाभांश की राशि से स्वास्थ्य शिविरों एवं वनकर्मियों के स्वास्थ्य उन्मुखीकरण प्रशिक्षण शिविरों में हुए व्यय हेतु राशि का आवंटन भी किया गया है।

इंदौर वन मण्डल के चोरल वन परिक्षेत्र में दिनांक 10.12.2016 को 17 आंगनबाड़ीयों के क्षेत्र में 80 बच्चों को गोद लिया गया व उपयुक्त पोषण हेतु ग्रोविट पाउडर (लघु वनोपज संध के विन्ध हर्बल केन्द्र में निर्मित) एवं मालिश हेतु तेल वितरण किया गया। नियमित रूप से बच्चों को पोषण आहार देने हेतु माताओं को प्रेरित किया गया, जिसके उपरान्त 10.01.2017 को पुनः वज़न करने पर बच्चों के वज़न में 100 ग्राम से लेकर 400 ग्राम की वृद्धि देखी गई।

नर्मदा सेवा यात्रा के बढ़ते कदम...

नर्मदा नदी के जल की अविरलता तथा उसकी गुणवत्ता एवं जैवविविधता को बनाये रखने के लिये मध्यप्रदेश सरकार की नमामि देवि नर्मदे योजना के अंतर्गत नदी के दोनों तटों पर वृक्षारोपण का कार्य किया जा रहा हैं। नर्मदा नदी प्रदेश के आठ वन वृत्तों के उन्नीस वन मंडलों (सोलह जिलों) एवं तिरपन वन परिक्षेत्रों से होकर प्रवाहित होती है। इस यात्रा के माध्यम से वृक्षारोपण, स्वच्छता, मृदा एवं जल संरक्षण, नदी किनारे प्रदूषण नियंत्रण के उपाय एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने का संदेश प्रसारित कर इन गतिविधियों को सफलता पूर्वक अपनाने को प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह यात्रा 11 दिसंबर 2016 में अमरकंटक से शुरू हुई और 144 दिनों में सोडवा होकर वापस अमरकंटक में 11 मई 2017 को पूर्ण होगी। इस यात्रा में वन विभाग महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान कर रहा है। यह यात्रा जनवरी माह में जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, हरदा से होते हुए 30 जनवरी को खण्डवा पहुँची। इसके बाद यह यात्रा 10 फरवरी को खरगौन पहुँची।

यह यात्रा फरवरी माह में बड़वानी, अलीराजपुर, होते हुए धार पहुँची। धार से यह यात्रा पुनः अमरकंटक की ओर चलते हुए मार्च माह मे खरगौन, देवास, सिहोर व रायसेन तक पहुँच गई है। आगे यह यात्रा जारी है।

नर्मदा सेवा यात्रा की झलकियां

अनुभूति कार्यक्रम

एक अनोखी पहल

जन सामान्य में वन, वन्यप्राणी एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता विकसित किया जाना आवश्यक हैं। जागरूक समाज ही प्रकृति एवं जैव विविधता संरक्षण के मार्ग को प्रशस्त कर सकता है। स्कूली विद्यार्थियो की इस संकल्प की पूर्ति में अहम् भूमिका है। यदि स्कूली विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी व्यवहार रखते हैं तो समाज में प्रकृति संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता स्वतः ही विकसित हो सकती है। विद्यार्थी पर्यावरण संरक्षण के संदेश के शक्तिशाली प्रचारक सिद्ध होंगे। इसी अवधारणा पर अनुभूति कार्यक्रम की परिकल्पना की गई है। प्रकृति संरक्षण का यह आलौकिक अनुभव इन संवाहको द्वारा चारों ओर प्रसारित किया जावेगा।

इसी उद्देश्य से जो पहल 15 दिसम्बर 2016 को शुरू हुई थी वह जनवरी माह मे सतत् जारी रही। अनुभूति कार्यक्रम के तहत एक दिवसीय ईको-कैम्प के आयोजन किये गये। प्रत्येक वन परिक्षेत्र स्तर पर 130 विद्यार्थीयों को संसाधनों की उपलब्धतानुसार एक या एक से अधिक ईको-कैम्प आयोजित कर पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य की जानकारी एवं अनुभवों के माध्यम से पारिस्थितिकीय तंत्र के घटकों की व्याख्या, पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता, पक्षी दर्शन, वन औषधी एवं वन प्रबंधन की सामान्य जानकारी एवं अनुभव प्रदान किया गया। इसके अलावा ट्रेकिंग, रोपणी भ्रमण, राष्ट्रीय उद्यान व अभ्यारण्य भ्रमण, वन्यप्राणियों का अवलोकन आदि गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में प्रकृति एवं वन्यप्राणियों से जुड़ाव पैदा किया गया।

इस एक माह के कार्यक्रम में प्रदेशभर में 53,935 स्कूली विद्यार्थियों द्वारा भाग लिया गया।

A Novel Approach

A special two day camp of Annubhuti was organized by Madhya Pradesh Ecotourism Development Board in Kanha Tiger Reserve in which 30 blind girls from "Ananya" participated. They were taken for nature trails and safari where they identified various trees by their barks, many birds and animals by their calls and plants by their leaves and flowers. They were also given information about birds and animals with the help of audio presentations. The girls are blessed with powerful sense of touch and sound and enjoyed every bit of their educational jungle experience.

वन मेले

मध्यप्रदेश लघु वनोपज संघ के द्वारा मालवा वन मेला का आयोजन

इन्दौर वन मण्डल एवं मध्यप्रदेश लघु वनोपज संघ के द्वारा 5 दिवसीय मालवा वन मेला का आयोजन दिनांक 09 फरवरी 2017 से दिनांक 13 फरवरी 2017 तक ढक्कन वाला कुंआ, इंदौर में आयोजित किया गया। मेले का उद्घाटन माननीया श्रीमती मालनी गौड़, महापौर नगर पालिक निगम, इंदौर द्वारा किया गया। मेले में इस वर्ष जड़ी बुटियों, आयुर्वेदिक उत्पाद, हेण्डीक्राफ्ट, हेण्डलूम एवं गृह उघोग की दुकानें लगाई गयी थीं। मेला अवधि के दौरान प्रत्येक दिवस स्कूली बच्चो एंव अन्य कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, चित्रकला प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, नृत्य, गायन आदि की प्रस्तुति दी गई।

ग्वालियर वन मेला

ग्वालियर वन मेले का आयोजन दिनांक 13 जनवरी 2017 से दिनांक 13 फरवरी 2017 तक किया गया। मेले में वन विभाग द्वारा 16 दुकानें लगाई गयीं, जिनमें जबलपुर, छिंदवाड़ा, दतिया, श्योपुर एवं ग्वालियर वन समितियों के सदस्यों एवं वैद्यों ने वन औषधियों एवं अन्य वन उत्पादों का प्रदर्शन एवं विक्रय किया। इसके अलावा वन मण्डल स्तर पर संचालित संजीवनी औषधि विक्रय के स्टॉल भी लगाए गए। मेले का उद्घाटन समारोह माननीय विधायक ग्वालियर ग्रामीण, श्री भारत सिंह कुशवाह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें मुख्य वन संरक्षक श्रीमती कंचन देवी, मुख्य वन संरक्षक श्री पंकज अग्रवाल एवं वन संरक्षक श्री विक्रम सिंह परिहार द्वारा वनों की सुरक्षा, वनौषधि एवं लघु वनोपज एवं कृषि वानिकी पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में ग्वालियर के गणमान्य नागरिक, ग्राम वन समिति के अध्यक्ष, सचिव एवं विभिन्न जिलों से आये हुये ग्रामीणों ने भाग लिया।

विश्व वानिकी दिवस

विश्व वानिकी दिवस प्रतिवर्ष 21 मार्च को मनाया जाता है। यह पहली बार वर्ष 1971 में इस उद्देश्य से मनाया गया था कि दुनिया के तमाम देश अपनी मातृभूमि की मिट्टी और वन-सम्पदा का महत्त्व समझें तथा अपने-अपने देश के वनों का संरक्षण करें।

विश्व वानिकी दिवस के अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन श्री शिवराज सिंह चौहान, माननीय वन मंत्री मध्य प्रदेश शासन डॉ. गौरीशंकर शेजवार तथा माननीय राज्यमंत्री, वन मध्यप्रदेश शासन श्री सूर्य प्रकाश मीणा द्वारा बहुमूल्य सन्देश प्रसारित किया गया।

मध्यप्रदेश शासन

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

संदेश

हरियाली के महत्व को रेखांकित करने के लिये प्रतिवर्ष 21 मार्च को विश्व वानिकी दिवस का आयोजन किया जाता है, ताकि जन साधारण में पौधारोपण तथा उनके संरक्षण के प्रति जागरूकता लाई जा सके। वृक्ष पर्यावरण के संरक्षक हैं और पर्यावरण रक्षा के लिये विश्व में जनचेतना का एक व्यापक अभियान सा चल रहा है।

मध्य प्रदेश में वानिकी के विकास के लिए जन सहभागिता आधारित वन प्रबंधन की अनेक गतिविधियां क्रियान्वित की जा रही है। प्रदेश में वनोपज की मांग और आपूर्ति के बीच बढ़ते अंतर को कम किये जाने के प्रयास निरंतर किए जा रहे हैं जिसमें हरियाली महोत्सव का अयोजन, निजी भूमि पर पौधारोपण को प्रोत्साहित किया जाना सम्मिलित है।

वन विभाग द्वारा किये जा रहे कार्यों को अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत करते हुए सराहा गया है। यह इस बात का घोतक है कि जनभागीदारी आधारित वन प्रबंधन सफल रहा है।

विश्व वानिकी दिवस के अवसर पर सभी नागरिकों से अनुरोध है कि वनोपज और हरियाली बचाने के लिये पौधा रोपण कर उनकी सुरक्षा का संकल्प लें।

शुभकामनाओं सहित।

शिवराज सिंह चौहान

मध्यप्रदेश शासन

डॉ गौरीशंकर शेजवार
वन मंत्री, म.प्र.शासन

संदेश

विश्व में हरे आवरण की लगातार कमी के कारण पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। इसको बनाए रखने के लिए वनों का संरक्षण और विकास ही एकमात्र विकल्प है। विश्व वानिकी दिवस (21 मार्च) हमें हरियाली बढ़ाने की दिशा में चिन्तन करने का अवसर प्रदान करता है।

वन विभाग द्वारा दीनदयाल वनांचल सेवा के माध्यम से अब वनवासियों के स्वास्थ्य तथा शिक्षा को बेहतर करने की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है। अनुभूति कार्यक्रम के द्वारा युवा पीढ़ी को वन तथा वन्यजीवों के संरक्षण के प्रति जगरूक करने की दिशा में सफलता मिली है। हम निश्चय ही आने वाले वर्षों में **हमारा संदेशः हर-भरा मध्य प्रदेश** को सही अर्थों मे सार्थक करते हुए भविष्य की पीढ़ी को खुशहाल भविष्य सौंप सकेंगे।

प्रदेश में हरियाली महोत्सव के तहत वर्षा ऋतु 2016 में आठ करोड़ से अधिक पौधों का रोपण किया गया है। प्रदेश में वनीकरण योजनाओं के अच्छे प्रभाव परिलक्षित हुए हैं। राज्य सरकार द्वारा वनों के विकास के साथ-साथ संरक्षण के लिये अनेक योजनायें क्रियान्वित की जा रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी इन योजनाओं का लाभ उठायेंगे।

विश्व वानिकी दिवस के अवसर पर आईये हम सब यह संकल्प लें कि वनों के विकास तथा संरक्षण में सहयोग करेंगे।

हार्दिक शुभकामनाए।

डॉ गौरीशंकर शेजवार

विश्व वानिकी दिवस

21 मार्च 2017

मध्यप्रदेश शासन

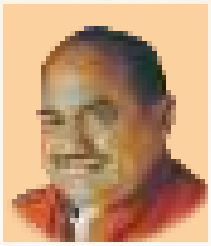

श्री सूर्यप्रकाश मीणा
राज्यमंत्री, म.प्र.शासन

संदेश

विश्व वानिकी दिवस वन तथा प्रकृति के प्रति हमारे कर्तव्य का बोध कराता है। वन संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के द्वारा हम भावी पीढ़ी का जीवन सुरक्षित रख सकेंगे।

हम सभी का प्रयास होना चाहिए कि जहां भी पौधे लगाए जाएं वे पेड़ बने और पौधे से पेड़ बनने की इस यात्रा में सबसे बडी आवश्यकता है, इन वृक्षों की सुरक्षा और संरक्षण। इस दिशा में शासकीय और गैर शासकीय दोनों स्तर पर विशेष ध्यान देने से ही अपेक्षित परिणाम मिल सकेंगे।

राज्य शासन द्वारा वनों के विकास के साथ संरक्षण के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही है। प्रदेश में वनीकरण योजनाओं का अच्छा प्रभाव देखने को मिला है। विभाग द्वारा पौध वितरण की समुचित व्यवस्था करने के बाद निजी क्षेत्र में ग्रामीण पौधारोपण कर समृद्धि की दिशा में अग्रसर हो रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि विश्व वानिकी दिवस जन साधारण में जागरूकता लाने में सफल रहेगा।

हार्दिक शुभकामनाएं।

श्री सूर्यप्रकाश मीणा

"जल-वन-नर्मदा-भोपाल" जन जागरूकता अभियान

वन, जल और नर्मदा की उपयोगिता भोपालवासियों को समझाते हुए उसकी धारा अविरल और निर्मल बनाए रखने के लिए म.प्र. जैव विविधता बोर्ड ने एक सराहनीय प्रयास किया। रविवार, मार्च 19, 2017 को भोपाल मे स्थित टी.टी. नगर स्टेडियम में जल-वन-नर्मदा-भोपाल के परिवेश में समग्र शासन अवधारणा के तहत एक रैली, निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया। माननीय वन मंत्री म.प्र. शासन डॉ. गौरीशंकर शेजवार ने इस रैली, निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता का शुभारंभ किया।

रैली में स्कूल व कॉलेज के छात्र-छात्राएँ, स्वयंसेवी संगठन, विभिन्न शासकीय विभागों के अधिकारी-कर्मचारी और आम लोगों ने भाग लिया। अपर मुख्य सचिव वन श्री दीपक खाण्डेकर, वन बल प्रमुख डॉ. अनिमेष शुक्ला, प्रधान मुख्य वन संक्षरक (वन्य-प्राणी) श्री जितेन्द्र अग्रवाल, वन विकास निगम के प्रबंध संचालक श्री रवि श्रीवास्तव सहित वरिष्ठ वन अधिकारी उपस्थित रहे।

जल–वन–नर्मदा–भोपाल जन–जागरूकता अभियान के तहत कार्यशाला का आयोजन

भोपाल मे स्थित आर.सी.वी.पी. नरोन्हा प्रशासन अकादमी में दिनांक 21 मार्च 2017 को विश्व वानिकी दिवस एवं जल दिवस के अवसर पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। माननीय मंत्री वन मध्यप्रदेश शासन डॉ. गौरीशंकर शेजवार ने जल वन नर्मदा भोपाल जन-जागरूकता अभियान के तहत आयोजित चित्रकला, निबंध और फोटोग्राफी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया। अपर मुख्य सचिव वन श्री दीपक खांडेकर, प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ. अनिमेष शुक्ला, वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी और प्रसिद्ध साहित्यकार श्री अमृतलाल वेगड़ भी उपस्थित रहे।

डॉ. शेजवार ने नर्मदा नदी की पैदल परिक्रमा करने और नर्मदा पर अनुपम साहित्य सृजन करने वाले प्रख्यात साहित्यकार श्री अमृतलाल वेगड़ का शॉल-श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया।

कार्यशाला की अनुशंसा

- नर्मदा सहित सभी नदियों को मानव के बराबार जीव का दर्जा दिया जाना चाहिये।
- वनाच्छादित जलग्रहण क्षेत्रों का संरक्षण किया जाना चाहिए। पारिस्थितिकीय सेवाओं को वानिकी कार्य आयोजनाओं में सम्मिलित किया जाना चाहिये।
- वनों के पारिस्थितिकीय सेवाओं का मूल्यांकन एवं इसका लाभ ग्रामीण क्षेत्र के आम नागरिकों को मिलना चाहिये।
- महाशीर संरक्षण का वृहद प्रयास नर्मदा के सभी क्षेत्रों में किया जाना चाहिये।
- पंचायत विभाग के चार्टर में स्थानीय निकाय स्तर पर जैवविविधता प्रबंधन समितियों के गठन का कार्य सम्मिलित किया जाना चाहिये।
- ''नमामि देवि नर्मदे'' व नर्मदा मिशन जैसे एक जन आंदोलन कार्यक्रम का संचालन में मैदानी स्तर पर स्थाई ढांचा प्रदान करने में पंचायत, जनपद पंचायत एवं जिला पंचायत स्तरीय जैवविविधता प्रबंधन समितियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।
- जैवविविधता स्वामित्व रखने वाले शासकीय विभागों की वार्षिक कार्ययोजना में जैवविविधता संरक्षण हेतु बजट प्रावधान किया जाना चाहिये।
- युवा पीढ़ी को जैवविविधता संरक्षण से जोड़ने की दिशा में ''जैवविविधता क्षमता विकास कार्यक्रम'' मध्य प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा संचालित किये जाने चाहिये।
- महानगरों में स्मार्ट सिटी योजना में जल बजट व स्मार्ट जल व्यवस्था सुनिश्चित की जावे।
- नदी के तटीय क्षेत्रों में रासायनिक खाद का उपयोग कम करने हेतु संबंधित शासकीय विभागों को जैविक खेती को बढ़ावा देना चाहिये।
- वन एवं जल प्रबंधन से संबंधित विषय स्कूल शिक्षा विभाग में सम्मिलित किया जाना चाहिये।
- पानी का मूल्याकंन किया जाना चाहिये।
- वानिकी प्रशिक्षण कार्यक्रम में ''वन हाइड्रोलॉजीकल'' विषय को सम्मिलित किया जाना चाहिये।
- जैवविधिता संरक्षण में समग्र शासन की अवधारणा के क्रियान्वयन हेतु राज्य स्तरीय/जिला स्तरीय समन्वय ढांचा विकसित किया जाना चाहिये।

जन–जागरूकता अभियान कार्यशाला का समापन

विधानसभा के माननीय अध्यक्ष डॉ. सीतासरन शर्मा के मुख्य आतिथ्य और वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार की अध्यक्षता में दिनांक 22 मार्च 2017 को समग्र शासन की ओर जागरूकता अभियान पर दो दिवसीय कार्यशाला का समापन हुआ। कार्यक्रम में जैव विविधता पर केन्द्रित चार पुस्तकों का विमोचन किया गया। माननीया महिला एवं बाल विकास मंत्री, श्रीमती अर्चना चिटनिस, अपर मुख्य सचिव वन श्री दीपक खाण्डेकर, प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ. अनिमेष शुक्ला, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य-प्राणी) श्री जितेन्द्र अग्रवाल और प्रबंध संचालक राज्य वन विकास निगम श्री रवि श्रीवास्तव भी उपस्थित रहे।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीतासरन शर्मा, वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार और श्रीमती अर्चना चिटनिस ने जैव विविधता बोर्ड की पुस्तिका का विमोचन किया।

वृक्ष प्रकृति की शान हैं,
अरू जीवन आधार।
वृक्ष लगाकर हम करें,
पृथ्वी का श्रृंगाार।।

वन विहार की गतिविधियाँ

वन विहार से वाइल्ड बोर का सफल स्थानांतरण

मध्यप्रदेश शासन वन विभाग द्वारा वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल से वाइल्ड बोर (जंगली सुअर) मुकुन्दपुर जू सतना स्थानांतरण करने की अनुमति दी गई थी। वन विहार में वाइल्ड बोर पकड़ने हेतु प्रबंधन द्वारा रणनीति तैयार की गई तथा निश्चित स्थल पर पिंजरे लगाए गये। पिंजरे में तीन नर एवं दो मादा वाइल्ड बोर पकड़े गए, जिन्हें दिनांक 23 मार्च 2017 को रेस्क्यू वाहन से मुकुन्दपुर जू भेजा गया।

दो मादा बाघ का वन विहार आगमन

दिनांक 08. मार्च 2017 को मादा बाघ गंगा एवं कमलेश को कमला नेहरू प्राणी उद्यान इंदौर से वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल लाया गया। मादा बाघ गंगा का जन्म 9 जनवरी 2015 को तथा मादा बाघ कमलेश का 5 अगस्त 2008 को इंदौर जू में हुआ था। वन विहार राष्टीय उद्यान, भोपाल में अब कुल 9 बाघ हैं।

गंगा

कमलेश

वन विहार में पक्षी दर्शन

वन विहार राष्टीय उद्यान, भोपाल में स्टाफ के लिए एक दिवसीय पक्षी दर्शन शिविर का आयोजन किया गया। इस पक्षी दर्शन शिविर का मुख्य उद्देश्य विभाग के कर्मचारियों को पक्षियों की पहचान एवं उनके संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी से अवगत कराना था, ताकि पर्यटकों को पक्षियों के बारे मे समग्र जानकारी प्रदान की जा सके। इस पक्षी दर्शन में वन विहार डायरेक्टर श्रीमती समीता राजोरा, असिस्टेन्ट डायरेक्टर पी. के. घई, भोपाल बर्ड्स के मो. खालिक, रेंजर व वन रक्षक मैजूद रहे।

इस मौके पर गार्ड्स एवं अधिकारियों ने वन विभाग में पाई जाने वाली पक्षी प्रजातियों को देख कर उनके बारे में जानकारी प्राप्त की। शिविर में ग्रे हेरॉन, लिटिल कोर्मोरेंट, स्पॉटेड आउलेट, पर्पल सन बर्ड आदि पक्षियों की प्रजातियां देखी गई।

ग्रे हेरॉन

स्पॉटेड आउलेट

नवाचार

कान्हा में पक्षी सर्वेक्षण

कान्हा टाइगर रिज़र्व में दिनांक 17-20 मार्च, 2017 के मध्य पक्षी सर्वेक्षण कार्य संपन्न किया गया। इस पक्षी सर्वेक्षण अभ्यास में 11 राज्यों के लगभग 75 प्रतिभागी सम्मिलित हुये थे। यह कार्यक्रम बर्ड काऊंट इण्डिया के डॉ. सुहैल कादर के विशेष तकनीकी मार्गदर्शन में संपादित किया गया। इस सर्वेक्षण अभ्यास में प्रकृतिविद् श्री डेविड राजू, श्री एरिक डी. कुन्हा एवं उनकी टीम का भी विशेष योगदान रहा।

पक्षी सर्वेक्षण कार्यक्रम के आरंभ में समस्त प्रतिभागी कान्हा टाइगर रिजर्व के अंतर्गत खटिया ईको-सेंटर में सम्मिलित हुये। समस्त प्रतिभागियों को कान्हा टायगर रिजर्व के क्षेत्र संचालक श्री संजय कुमार शुक्ला द्वारा सम्बोधित किया गया। उन्होने इस पक्षी सर्वेक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुये प्रतिभागियों को कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा समझायी। उन्होंने इस पक्षी सर्वेक्षण को निर्धारित प्रोटोकाल के अंतर्गत किये जाने पर विशेष बल दिया। बर्ड काऊंट इण्डिया के डॉ. सुहैल कादर द्वारा प्रतिभागियों को पक्षी सर्वेक्षण की तकनीकी विधि की जानकारी देते हुये आकड़ों की संकलन प्रक्रिया के बारे में समझाया एवं सर्वेक्षण के दौरान अपनायी जाने वाली सावधानियों का भी उल्लेख किया। इसके पश्चात श्री डेविड राजू एवं श्री एरिक डी. कुन्हा द्वारा भी प्रतिभागियों को सर्वेक्षण से संबधित जानकारी दी गयी तथा उनके सर्वेक्षण से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दिये गये। इस पक्षी सर्वेक्षण कार्य में ई-बर्ड कम्प्यूटर साफ्टवेयर की भी उपयोग किया गया।

कान्हा टाईगर रिजर्व के कोर क्षेत्र एवं फेन अभ्यारण्य को इस कार्य के लिए 32 ग्रिड में बांटा गया था। प्रत्येक ग्रिड में 2 कि.मी. ट्रांजेक्ट लाईन पर 200-200 मीटर के खंडो में पक्षी सर्वेक्षण आकड़ों को सूचीबद्ध किया गया। इसके अतिरिक्त जलस्त्रोत एवं रात्रि में पक्षियों के आवास के आधार पर भी उनको सूचीबद्ध किया गया।

ग्रीन वार्बलर

दिनांक 20 मार्च, 2017 को समस्त प्रतिभागी अपने-अपने सर्वेक्षण क्षेत्रों से लौटकर खटिया ईको-सेंटर में सम्मिलित हुये तथा उन्होने अपनी पक्षी सर्वेक्षण सूची प्रस्तुत की। इस दौरान प्रतिभागियों के साथ इस कार्यक्रम के बारे में गहन विचार-विमर्श किया गया।

इस सर्वेक्षण में सबसे अधिक पायी जाने वाले पक्षियों में ब्राऊन हेडेड बारबेट एवं मोर है तथा कुछ दुर्लभ पक्षियों में एशी मिनिवेट, रोसी मिनिवेट, शार्ट इयर्ड आऊल, क्रिसटेड गोशहाक, स्पाटेड ट्री क्रीपर, ग्रीन वार्बलर एवं टिकस थ्रश भी देखे गये।

पेंच टाइगर रिजर्व से चीतल स्थानांतरण

पेंच टाइगर रिजर्व, सिवनी में चीतलों की संख्या अधिक हो जाने के कारण घास मैदान प्रभावित हो रहे हैं एवं चीतलों के भोजन की कमी होने की संभावनाएं है। इस कारण पेंच टाइगर रिजर्व से अन्य टाइगर रिजर्व एवं अभ्यारण्य जहां पर शाकाहारी पशुओं की संख्या कम है, वहां पर चीतल भेजने हेतु मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक, मध्यप्रदेश भोपाल के द्वारा सतपुड़ा टाइगर रिजर्व एवं नौरादेही अभ्यारण्य को एक हजार चीतल एवं खण्डवा वनमण्डल को 100 चीतलों को भेजने की स्वीकृति प्रदत्त की गयी है। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व एवं नौरादेही अभ्यारण्य के विस्थापित गांवों में अच्छी गुणवत्ता के घास के मैदान निर्मित हो चुके हैं।

चीतलों को बोमा पद्धति से पकड़ने की कार्यवाही की जा रही है। जिसके लिए महादेवघाट में अस्थाई बोमा एवं छेड़िया घास मैदान में स्थाई बोमा का निर्माण किया गया है। बोमा पद्धति से चीतलों को प्रशिक्षित स्टाफ एवं श्रमिकों की सहायता से बोमा में लाकर रेस्क्यू वाहन में चढ़ाया जाता है। दिनांक 14 फरवरी 2017 से अभी तक चार बार में 35 नग चीतल सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में भेजे जा चुके हैं एवं एक बार में 21 नग चीतल खण्डवा वनमण्डल को भेजा जा चुका है। अभी तक कुल 56 चीतलों को भेजा जा चुका है।

साल बीज से साल वृक्षों का पुनरुत्पादन

वन परिक्षेत्र अमझोर, वनमंडल उत्तर शहडोल की बीट बड़काडोल के कक्ष क्रमांक पी-494, रकबा 25 हे. में क्षेत्र तैयारी एवं रोपण के समय साल प्रजाति के प्लस ट्री से 24 से 48 घंटों में साल बीजों का संग्रहण करके 01-01 हे. में वर्ष 2008 एवं 2009 में 30x30 से.मी. गहरी नाली (फरों) खोदकर, गुड़ाई करके खाद एवं काली मिट्टी मिलाकर (मिट्टी तैयार कर) साल बीजों का रोपण, बोवाई कार्य वर्षा के पूर्व जून के अंतिम सप्ताह में किया गया। इसके चारों तरफ से फेंसिंग होने एवं चराई से प्रतिबंधित किये जाने के फलस्वरूप साल बीज से उत्पन्न, पुनरोत्पादित साल के स्वस्थ पौधे प्राप्त हुये, जिनका समय-समय पर निदाई-गुड़ाई एवं उपचार कार्य करने पर वर्तमान वर्ष 2017 में अधिकतम 3 मीटर ऊँचाई, 25 से.मी. गोलाई एवं न्यूनतम 2 मी. ऊँचाई, 15 से.मी. गोलाई के साल वृक्ष उपलब्ध हैं। उक्त साल रोपण को समय-समय पर वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा निरीक्षण कर सराहा गया है।

सीधे साल बीज से रोपण के प्रायोगिक प्रयास से प्राप्त सफलता के चलते रोपण कराने वाले तत्कालीन वनरक्षक श्री दिलीप मिश्रा को पारीबाहर पदोन्नत करके वनपाल बनाया गया।

People's Health Care in Kanha Tiger Reserve

Kanha Tiger Reserve is one of the most majestic tiger reserves of India. Kanha National Park was created on 1 June 1955 and was declared a Tiger Reserve in 1973. Today Kanha Tiger Reserve stretches over a core area of 940 km^2 in Mandla and Balaghat districts, has a surrounding buffer zone of 1,067 km^2 and the neighboring Phen Sanctuary of 110 km^2. This makes it the largest National Park in Central India.

The population residing in the villages near Kanha Tiger Reserve and the frontline staff of the Reserve in the past have suffered from various infections and diseases. The area is also said to be highly malarious, with a serious strain of falciparum affecting a large number of people. Some other typical ailments include viral fever, typhoid, jaundice, and diarrhea etc. Serious medical conditions have also been reported in the area. To compliment the health programmes and the setup of the District Health Departments of Mandla and Balaghat, the Kanha Management has made an effort to contribute to the noble cause by setting up a modestly equipped dispensary with a physician located at Mukki. Not only has it provided the most needed medical facilities to the locals of the area but also provided three ambulances to the staff and the villagers which are used during emergencies. The physician routinely tours the tiger reserve area to examine the patients and dispense medicines. The management also coordinates with NGOs and groups of enthusiastic doctors to organize health camps for treatment of these villagers. In recent years, the Kanha management has organized 17 health camps for 3407 beneficiaries.

विविधा

संकल्प वन मेले का आयोजन

वनश्री महिला क्लब की ओर से दिनांक 19 फरवरी को एक दिवसीय संकल्प वन मेले का आयोजन किया गया। इस मेले का शुभारंभ डॉ. किरण शेजवार के कर कमलों के द्वारा किया गया। वनश्री महिला क्लब की अध्यक्षा श्रीमती दीपा शुक्ला की पहल एवं मार्गदर्शन के साथ श्रीमती सीमा श्रीवास्तव, श्रीमती आभा गुप्ता, श्रीमती शाहिदा हसन, श्रीमती साधना अग्रवाल, श्रीमती संगीता तिवारी, श्रीमती संतोष खरे एवं अन्य सदस्यों का बहुमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। मेले में वनश्री महिला क्लब के 80 सदस्यों द्वारा बनाए गये विभिन्न उत्पादों को शामिल किया गया। इन उत्पादो में सजावटी पौधे, हैंडी क्राफ्ट, आयुर्वेदिक उत्पाद, पेंटिंग्स, ज्वैलरी, बेडशीट सहित अन्य उत्पाद रखे गये। इसके अलावा यहां पर बच्चों के लिए मनोरंजक खेलों का आयोजन भी किया गया। इस मेले से एकत्रित हुई राशि का उपयोग वनश्री महिला क्लब के द्वारा सुदूर वनांचलों में निवासरत ग्रामीणों की मदद करने में किया जायेगा।

विभागीय गतिविधियां

The 7th K.P. SAGREIYA MEMORIAL LECTURE -The 7th K.P. SAGREIYA MEMORIAL LECTURE on "ENVIRONMENT, FORESTRY & PEOPLE" by Dr. D.N. Tiwari was organized at State Forest Research Institute on the 15th of February 2017.

नीम की छाँव में का प्रसारण – मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड द्वारा प्रदेश के प्रायमरी एवं लोकल चैनल रेडियो स्टेशन एवं विविध भारती सहित कुल 18 आकाशवाणी केन्द्रों से जैवविविधता के संरक्षण, संवर्धन एवं जनजागरूकता पर आधारित कार्यक्रम नीम की छाँव में का प्रसारण दिनांक 26.01.2017 से प्रारंभ किया गया। आकाशवाणी में कार्यक्रम का प्रसारण प्रत्येक माह द्वितीय एवं चतुर्थ गुरूवार को समय सायं 6:50 से 7:05 बाजे तक किया जाता है। इस कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञों के द्वारा जैवविविधता सरंक्षण एवं संवर्धन से संबंधित जन उपयोगी जानकारी प्रदान की जा रही है।

''स्पेशल अचिवमेंट इन जीआईएस'' पुरस्कार - विभाग द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय कार्यों के लिए इसरो इंडिया संस्था द्वारा विभाग को ''स्पेशल अचिवमेंट इन जीआईएस'' पुरस्कार प्रदान किया गया है।

A "Health Awareness Camp for Women" was organized at Mukki Dispensary of Kanha Tiger Reserve on the 3rd and the 4th of March 2017. This Camp was attended by 398 women. Among these women there were two critical cases of complicated pregnancy. These patients were shifted immediately to Balaghat for further treatment.

कृषकों से विभागीय डिपों में बांस की खरीदी- विभाग द्वारा पांच डिपो (बालाघाट, सतना, हरदा, भोपाल तथा अलीराजपुर) में प्रायोगिक तौर पर कृषकों से बांस की खरीदी करने का निर्णय लिया गया है। कृषकों से बांस 1 जनवरी, 2017 से 30 जून, 2017 के बीच क्रय किया जाएगा, ताकि हितग्राहियों को हरा बांस विक्रय किया जा सके। 30 जून, 2017 के बाद शेष बचे बांसों को नीलामी द्वारा निर्वर्तित किया जाएगा।

Convocation of the 62nd Forest Guard Training Programme was held at Pachmarhi on 31st March 2017. Chief Consevator of Forests Shri V.K. Neema was the chief guest in the event and Retired Chief Consevator of Forests Shri Arun Bhugaonkar was the special guest.

An employment guidance camp was organised on 25.03.2017 in Kirnapur range of South Balaghat division where around 350 unemployed youth participated. Private companies Larson & Tubro and ITC Hotels were invited for the camp. Certificates of completion and merit were given out to a batch of 33 persons. All the 33 have got employed with respectable salaries. A total of 105 youth have been trained under this program in the last one year. It has made and a positive social impact in naxal affected areas.

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सिवनी एवं छिंदवाड़ा वन मण्डल में संगोष्ठी

दिनांक 08 मार्च, 2017 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सिवनी एवं छिंदवाड़ा वन वृत्तों में महिला सशक्तिकरण विषय पर कार्यक्रमों का आयेजन किया गया। इस अवसर पर सिवनी में राजीव गांधी सहभागी वानिकी प्रशिक्षण संस्थान लखनादौन में वनपरिक्षेत्र में कार्यरत समस्त महिला वन अधिकारियों तथा कर्मचारियों की संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में सिवनी तथा नरसिंहपुर जिले में कार्यरत 80 महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों नें भाग लिया। इस संगोष्ठी को वन अधिकारियों के अतिरिक्त अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश लखनादौन, जिला अभियोजन अधिकारी सिवनी, तहसीलदार लखनादौन, तथा सहायक उप निरीक्षक लखनादौन द्वारा भी संबोधित किया गया। इनके संबोधन के पश्चात् प्रतिभागियों के समूह बनाकर विभिन्न विषयों जैसे अकाष्ठीय वनोपज संग्रहण, संयुक्त वन प्रबंधन, वन एवं वन्यप्राणी सुरक्षा तथा कार्य आयोजना के प्रावधानों के क्रियान्वयन, तथा उसमें महिलाओ की भागीदारी को बढ़ाने आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। इसके अलावा छिंदवाड़ा वन मण्डल में भी इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन किया गया।

महिला दिवस पर वन विभाग द्वारा
महिला कर्मचारियों का सम्मान

मध्य प्रदेश ईको टूरिज्म बोर्ड द्वारा आयोजित अतिथि सत्कार का प्रशिक्षण

मध्य प्रदेश ईको टूरिज्म बोर्ड द्वारा मार्च 2017 में प्रदेश के विभिन्न वन मंडलों के कर्मियों के लिए अतिथि सत्कार का प्रशिक्षण कार्यक्रम करवाया गया।

इस कार्यक्रम का आयोजन भोपाल के विंड्स एंड वेव्स होटल में किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 46 कर्मियों ने भाग लिया तथा प्रशिक्षण के उपरांत प्रधान मुख्य संरक्षक, वन्यप्राणी श्री जीतेन्द्र अग्रवाल के द्वारा प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र प्रदान किये गए।

कृषि वानिकी से कृषक समृद्धि योजना पर पुस्तिका का प्रकाशन

कृषि वानिकी से कृषक समृद्धि योजना मध्यप्रदेश वन विभाग की महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक है, जिसका उद्देश्य राज्य के हरे आवरण में वृद्धि करने के साथ साथ कृषकों को आर्थिक दृष्टि से मजबूत करना भी है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु तथा लोगों मे जागरूकता बढ़ाने के लिए अनुसंधान, विस्तार एवं लोकवानिकी शाखा ने कृषि वानिकी से कृषक समृद्धि योजना पुस्तिका को तैयार किया है, जिसमें योजना के उद्देश्य, घटक, वनदूत व कृषकों की भूमिका, पौधा रोपण के लिए तकनीकी जानकारी आदि को विस्तार से समझाया गया है।

23वीं अखिल भारतीय वन खेल-कूद प्रतियोगिता

वन विभाग में खेलों की विधिवत् शुरूआत वर्ष 1992 में हुई जब भारत सरकार द्वारा अखिल भारतीय वन खेल कूद प्रतियोगिता प्रारंभ करने की घोषणा की गई। प्रथम अखिल भारतीय वन खेल-कूद प्रतियोगिता 1992 हैदराबाद में आयोजित की गई थी।

अभी तक आयोजित कुल 22 अखिल भारतीय वन खेल-कूद प्रतियोगिताओं में मध्यप्रदेश को 5 बार प्रथम स्थान, 12 बार द्वितीय स्थान एवं 5 बार तृतीय स्थान प्राप्त हुए हैं।

23 वीं अखिल भारतीय वन खेल-कूद प्रतियोगिता दिनांक 07 से 11 जनवरी 2017 में तेलंगाना राज्य के हैदराबाद में आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में एथलेटिक्स, क्रिकेट, हॉकी, फुटबाल, व्हालीबाल, बास्केटबाल, कबड्डी, रस्साकसी, टैबिल टेनिस, कैरम, शतरंज, ब्रिज, बिलियर्ड्स, स्नूकर, गोल्फ, तैराकी, भारोत्तोलन, शक्तितोलन, रायफल शूटिंग एवं स्क्वाश खेलों को सम्मिलित किया गया।

श्री विभाष ठाकुर (CCF R&E Bhopal) लान टेनिस में स्वर्ण पदक प्राप्त करते हुए

सुश्री रूबी कौर (प्रोग्रामर आई.टी.) टेबिल टेनिस में स्वर्ण पदक प्रापत करते हुए

श्री सुधीर नेमा (सहायक वर्ग-III) तैराकी, (50 मी. फ्री स्टाईल) में स्वर्ण पदक प्रापत करते हुए

इस प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश वन की टीम ने 21 स्वर्ण पदक 17 रजत पदक 18 कांस्य पदक के साथ 208 अंक अर्जित किये।

स्वर्ण पदक विजेता

श्री आर.डी महला (एथेलेटिक्स, शाटपूट मेन सिनी. वेटरन), श्री सुधीर नेमा (तैराकी, 50 मी. फ्री स्टाईल), श्री सुधीर नेमा (तैराकी, 50 मी. ब्रेक स्ट्रोक), श्री एम.आर.निवासकर (भारोत्तोलन, 77-85 कि.ग्रा मेन सिनी. वेटरन), श्री शरिफ खान (शक्तितोलन, 105-120 कि.ग्रा मेन सिनी. वेटरन), श्री ब्रम्हानंद श्रीवास्तव (शतरंज, क्लासिक) श्री विभाष कुमार ठाकुर एवं श्री पंकज अग्रवाल (लान टेनिस, मेन वेटरन डबल्स), श्री विभाष कुमार ठाकुर एवं श्रीमती कंचन देवी (लान टेनिस, मिक्स्ड डबल्स वेटरन), श्री दिलीप बाथम (कैरम, सिंगल), श्री दिलीप बाथम एवं मुनव्वर खान (कैरम, डबल्स), श्री नरेन्द्र सिंह ठाकुर (टेबिल टेनिस, पुरूष वेटरन सिंगल), सुश्री रूबी कौर (टेबिल टेनिस, महिला वेटरन सिंगल), सुश्री रूबी कौर (टेबिल टेनिस ,महिला ओपन सिंगल), सुश्री रूबी कौर (टेबिल टेनिस, महिला सिनी. वेटरन सिंगल), श्री नरेन्द्र सिंह ठाकुर एवं श्री ओ.पी.यादव (टेबिल टेनिस, पुरूष ओपन डबल्स), श्री नरेन्द्र सिंह ठाकुर एवं श्री

ओ.पी. यादव (टेबिल टेनिस, पुरूष सिनी. वेटरन डबल्स), सुश्री रूबी कौर एवं श्रीमती अनुराधा शर्मा (टेबिल टेनिस, महिला ओपन डबल्स), श्री नरेन्द्र सिंह ठाकुर एवं श्री मिलिन्द पाटिल (टेबिल टेनिस, मेन वेटरन डबल्स), सुश्री रूबी कौर एवं श्रीमती अनुराधा शर्मा (टेबिल टेनिस, महिला सिनी. वेटरन डबल्स), सुश्री रूबी कौर एवं श्रीमती अनुराधा शर्मा (टेबिल टेनिस, महिला वेटरन डबल्स), श्री नरेन्द्र सिंह ठाकुर एवं सुश्री रूबी कौर (टेबिल टेनिस, मिक्स्ड वेटरन डिबल्स)

रजत पदक विजेता

श्री यज्ञ नारायण सेन (एथेलेटिक्स, 1500 मी. वाक मेन वेटरन), श्री सुधीर नेमा (तैराकी, 50 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक मेन वेटरन), श्री एम.आर निवासकर (भारोत्तोलन, 77-85 कि.ग्रा मेन वेटरन), श्री मनोज राजपूत (भारोत्तोलन ,105 कि.ग्रा से अधिक मेन वेटरन), श्री देवेन्द्र दिवान (शक्तितोलन, 59-66 कि.ग्रा मेन ओपन), श्री एम.आर. निवासकर (शक्तितोलन, 83-93 कि.ग्रा मेन सिनी. वेटरन), श्री प्रवीण येरपुड़े (शक्तितोलन, 93-105 कि.ग्रा मेन सिनी.वेटरन), श्री रमेश कुमार (गुप्ता लान टेनिस , मेन सिनी. वेटरन सिंगल), श्रीमती रजनी सक्सेना (लान टेनिस, वूमन सिनी. वेटरन सिंगल), श्री बी.के मिश्रा एवं श्री रमेश कुमार गुप्ता (लान टेनिस, मेन सिनी. वेटरन डबल्स), श्री आकाश बाल्यान (स्नूकर), श्री नरेन्द्र सिंह ठाकुर एवं सुश्री रूबी कौर (टेबिल टेनिस, मिक्स्ड डिबल्स ओपन), श्रीमती नलिनी सक्सेना (बैड मिंटन, वूमन सिनी. वेटरन सिंगल), श्री रामजियावन पटेल एवं श्री एस.एस. सेंदराम (बैड मिंटन, पुरूष वेटरन डबल्स), श्रीमती नलिनी सक्सेना एवं श्रीमती रजनी सक्सेना (बैड मिंटन, वूमन सिनी. वेटरन डबल्स), टीम गेम (व्हालीबॉल), श्री विरेन्द्र सिंह सिसेदिया (रायफल शूटिंग)

कांस्य पदक विजेता

श्री आर.डी.महला (एथेलेटिक्स, डिस्कस थ्रो मेन वेटरन), श्री मानसिह मरावी (एथेलेटिक्स, जेवलिन थ्रो मेन वेटरन), सुश्री निधि बिदुआ (एथेलेटिक्स, जेवलिन थ्रो वूमन ओपन), रामबाबू बाथम (तैराकी, 100 मी. फ्रि स्टाईल मेन ओपन), श्री सुधीर नेमा (तैराकी, 50 मी. बैक स्ट्रोक मेन वेटरन), श्री मनोज सरवैया (भारोत्तोलन, 56-62 कि.ग्रा. मेन वेटरन), श्री देवेन्द्र नाहर (शक्तितोलन, 66-74 कि.ग्रा. मेन सिनी वेटरन), अनूप वर्मा (शक्तितोलन, 83-93 कि.ग्रा. मेन ओपन), श्री समीर खान (शक्तितोलन, 92-105 कि.ग्रा. मेन ओपन), श्री शरीफ खान (शक्तितोलन, 105-120 कि.ग्रा. मेन वेटरन), सुश्री स्नेहलता नागेश (शतरंज क्लासिक), श्री पंकज अग्रवाल (लान टेनिस, मेन वेटरन सिंगल), श्रीमती कंचन देवी (लान टेनिस, वूमेन वेटरन सिंगल), श्रीमती रजनी सक्सेना एवं श्रीमती नलिनी सक्सेना (लान टेनिस, वूमेन सिनी.वेटरन डबल्स), श्री मती कंचन देवी एवं श्रीमती रजनी सक्सेना (लान टेनिस, वूमेन वेटरन डबल्स), श्री कवित उसारिया (शतरंज, रेपिड चेस), श्रीमती नलिनी सक्सेना एवं श्रीमती समीता राजोरा (बैड मिंटन, वूमन वेटरन डबल्स), टीम गेम (व्हालीबॉल)

चतुर्थ स्थान

श्री रामगोपाल सहरिया (एथेलेटिक्स, 25 किमी. मैराथन मेल सिनी. वेटरन), श्री यज्ञ नारयण (एथेलेटिक्स, 25 किमी. मैराथन मेल वेटरन), श्रीमती गीता बघेल (एथेलेटिक्स, 400 मी. वाक वूमेन सिनी. वेटरन), श्री गेंदलाल चौधरी (एथेलेटिक्स, 5000 मी. रेस मेन सिनी. वेटरन), अशोक कुमार खरे (तैराकी, 50 मी. फ्रि स्टाईल मेन ओपन), श्री राजेन्द्र सिंह शाहा (भारोत्तोलन, 69-77 कि.ग्रा. मेन वेटरन), शरिफ खान (भारोत्तोलन, 105 कि.ग्रा. से अधिक मेन सिनी. वेटरन), डॉ. एस.पी. तिवारी (शक्तितोलन, 93-105 कि.ग्रा. मेन सिनी. वेटरन), श्री प्रवीण येरपुड़े (शक्तितोलन, 93-105 कि.ग्रा. मेन वेटरन), श्री शरिफ खान (भारोत्तोलन, 105 कि.ग्रा. से अधिक मेन ओपन), श्री एस.एस सेंदराम एवं श्रीमती रजनी सक्सेना (बैड मिंटन, मिक्स डबल्स), श्रीमती रजनी सक्सेना (लान टेनिस, वूमेन ओपन सिंगल), श्री विपिन कुमार पटेल (स्क्वाश, मेन ओपन), श्री बी.एस अन्निगेरी (स्क्वाश, मेन वेटरन), श्रीमती कल्पना मालवीय एवं श्रीमती शशि गुप्ता (कैरम, वूमेन ओपन डबल्स), श्रीमती कल्पना मालवीय एवं श्रीमती शशि गुप्ता (कैरम, वूमेन सिनी. वेटरन डबल्स), श्रीमती नलिनी सक्सेना (बैडमिंटन, वूमेन वेटरन सिंगल), टीम गेम (बास्केट बॉल, पुरूष), डॉ. रेणु सिंह (रायफल शूटिंग, महिला)

वन्यप्राणी जागरूकता

दक्षिण वन मण्डल पन्ना के द्वारा 03 मार्च 2017 को विश्व वन्य प्राणी दिवस के अवसर पर जिले के 261 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में वन्यप्राणी संरक्षण एवं उसके महत्व के विषयों को लेकर जागरूकता के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कराया गया। इस शिक्षण कार्यक्रम में विभाग के 150 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने 10993 विद्यार्थियो को विभिन्न प्रकार के वन्य प्राणियों का परिचय, उनकी पर्यावरण में उपयोगिता, एवं उनके संरक्षण आदि विषयों पर विस्तार से समझाते हुए विद्यार्थियों के द्वारा वन्य प्राणियों संबंधित प्रश्नों के उत्तर देकर उनकी शंकाओं का समाधान किया गया।

Wildlife Wonders of Madhya Pradesh Photography Contest

Theme :

Butterflies, Spiders and Insects of Madhya Pradesh

The third series of the Wild life photography contest "Wildlife Wonders of Madhya Pradesh" organized by MP Tiger Foundation Society covered the theme of "Butterflies, Spiders and Insects of Madhya Pradesh". The contest was held in the month of February, the results of which were declared in the month of March. The winner was selected based upon the evaluation by a committee formed by the Secretary, MP Tiger Foundation Society.

The winner, Mr. Dilip Katiyar was awarded a voucher entitling him for a 2 Night hotel stay and Rs 20,000 -/ cash.

The top three photographs which received maximum likes in Facebook were awarded "Facebook Favourite Awards". The winner with 426 likes, Mr. Ravi Sarathe was awarded a prize of 5000 rupees, the first and second runners up were given a prize of 3000 rupees and 2000 rupees respectively.

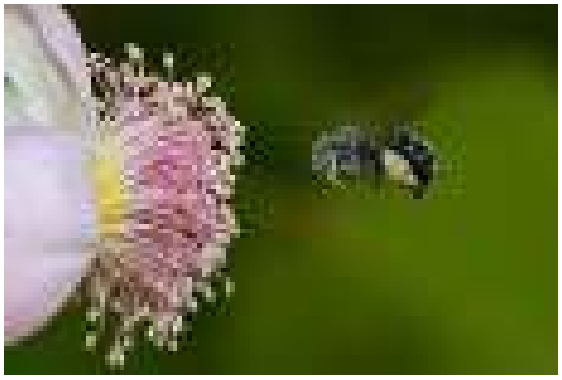

1. Photograph by Mr. Dilip Katiyar

2. Photograph by Mr.Deepansh Mishra

3. Photograph by Mr. Ravi Sarathe

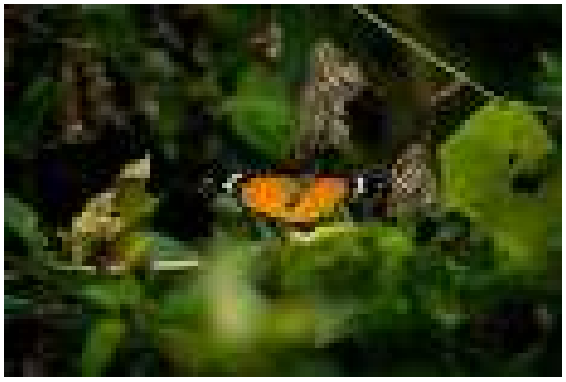

4. Photograph by Mr. Mridul Soni

पचमढ़ी में एक शाम जंगल के नाम

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व प्रबंधन द्वारा पचमढ़ी में एक शाम जंगल के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें श्री व्ही. बी. सावरकर, पूर्व संचालक, भारतीय वन्य जीव संस्थान और स्थानीय रहवासियों, पर्यावरणविदों, पर्यटकों, गाइड्स से मुखातिब हुए और संरक्षित क्षेत्रों के बाहर वन्यप्राणी प्रबंधन के महत्व को रोचक तरीके से समझाया।

An Evening with JUNGLEWALAHS in Kanha Tiger Reserve

Dr Asad A Rahmani, Former Director of The Bombay Natural History Society Mumbai delivered a lecture on Birds of Central India and their conservation issues on 28th Mar 2017 in Kanha Tiger Reserve.

जॉनी नहीं रहा

नर सिंह जॉनी वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल के रेस्क्यू सेंटर में दिनांक 21 अक्टूबर 2006 को लगभग 16 वर्ष की उम्र में राजमहल सर्कस कोरबा से लाया गया था। बेहतर रख रखाव व देखभाल के फलस्वरूप सिंह जॉनी वन विहार में लगभग 10 वर्षों तक पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना रहा। उसने लगभग 26 वर्ष की उम्र में वृद्धावस्था के कारण दिनांक 2 मार्च 2017 को आखरी सांस ली।

Infamous Wildlife Trader arrested in Kanpur

In the month of Feburary, Madhya Pradesh State Tiger Force ACF Shri Ritesh Sirothia, in close coordination with the State Tiger Force unit of Kanha Tiger Reserve arrested infamous wildlife trader Shamim Hasan Qureshi at Kanpur.

प्रशंसा एंव पारितोषक

गणतंत्र दिवस के अवसर पर वन एवं वन्य प्राणी संरक्षण और विकास में सराहनीय योगदान के लिये सहायक लोक अभियोजन अधिकारी व 20 वनकर्मी सम्मानित

प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख डॉ. अनिमेष शुक्ला ने भोपाल में हुए गणतंत्र दिवस समारोह में ध्वजारोहण के बाद वन एवं वन्य प्राणियों के संरक्षण और विकास में सराहनीय योगदान के लिये 20 वन कर्मियों तथा एक सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी को सम्मानित किया। प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य प्राणी) श्री जितेन्द्र अग्रवाल भी मौजूद थे।

वन एवं वन्यप्राणियों के संरक्षण और विकास में सराहनीय योगदान देने के लिए गणतंत्र दिवस पर 20 वनकर्मियों को सम्मानित किया गया

सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी श्रीमती सुधा विजय सिंह भदौरिया सागर को वन तथा वन्य प्राणी अपराध से संबंधित प्रकरणों में विभाग का पक्ष प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हुए दोष सिद्धि तथा जमानत निरस्ती के उत्कृष्ट कार्य के लिये प्रशस्ति पत्र दिया गया।

वन एवं वन्यप्राणियों के संरक्षण और विकास में सराहनीय योगदान देने के लिए गणतंत्र दिवस पर 20 वनकर्मियों को सम्मानित किया गया

राज्य स्तरीय टाईगर स्ट्राइक फोर्स द्वारा वन्य-प्राणियों के अपराध प्रकरणों के अन्वेषण तथा जाँच कर प्रदेश तथा प्रदेश के सीमावर्ती राज्यों के कई शिकारियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश करने के लिये सुश्री श्रद्धा पंद्रे, सहायक वन संरक्षक (क्षेत्रीय) टाइगर स्ट्राइक फोर्स (सागर), राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स भोपाल के श्री चन्द्रशेखर शर्मा वनपाल, श्री उमंग वर्मा वनरक्षक, श्री रवि शर्मा वन रक्षक, श्री अजय कुमाल दामड़े वनरक्षक, श्री अनिल यादव वनपाल तथा राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स के श्री विनोद कुमाल जोसेफ, सतना के श्री राजकिशोर प्रजापति वनरक्षक को उत्कृष्ट कार्य एवं साहसिक प्रयास के लिये प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये।

वन तथा वन्य प्राणी संरक्षण में सराहनीय योगदान देने के लिये भोपाल वन वृत्त में पदस्थ वनपाल श्री शम्भूलाल सोनी, वनपाल श्री प्रताप सिंह यादव, वनरक्षक श्री शोभाराम विश्वकर्मा, वनरक्षक श्री प्रदीप कुमाल श्रीवास्तव, वनरक्षक श्री सर्जन सिंह मीणा, वनपाल श्री रामशरण सिंह, वनरक्षक श्री श्रवणसिंह यादव, वनरक्षक श्री अशोक साहू, वनपाल श्री आशीष श्रीवास्तव, वनरक्षक श्री राकेश शर्मा, वनपाल श्री सनातन सिंह को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये।

स्व. जोहनलाल नामदेव को मरणोपरांत पुरस्कार

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के निर्देश के पालन में दिनांक 14 फरवरी 2017 को प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ. अनिमेष शुक्ला ने शहडोल के स्व. जोहनलाल नामदेव को उत्कृष्ट वृक्षारोपण के लिये पुरस्कृत किया। स्व. नामदेव ने विभिन्न प्रजाति के 1550 पौधे सार्वजनिक स्थलों पर लगाकर गर्मी के मौसम में काँवर से सिंचाई कर इन पौधों को वृक्ष में तब्दील किया था। स्व. नामदेव की पत्नी श्रीमती इन्द्रवती को पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र और शील्ड भोपाल के दो दिवसीय मुख्य वन संरक्षक सम्मेलन में प्रदान की गयी।

गणतंत्रता दिवस 2017 में वन विभाग की झांकी को मिला पुरस्कार

भोपाल वनमण्डल गणतंत्र दिवस पर लाल परेड मैदान में आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय समारोह मे आकर्षक झांकी को शामिल करता आ रहा है। इस बार आयोजित 68 वे गणतंत्र समारोह में वर्ष झांकी का शीर्षक नमामि देवि नर्मदे रखा गया। इस झांकी में माननीय मुख्यमंत्री द्वारा प्रदेश की जीवन रेखा मॉ नर्मदा नदी को संरक्षित, पुनर्जीवित एवं पर्यावरणीय संरक्षण हेतु नमामि देवि नर्मदे योजना को रेखांकित किया गया।

झांकी मे नर्मदा नदी के किनारे बसे बैगा जनजाति को अपनी पारंपरिक वेशभूषा में स्थानीय नृत्य करते हुए प्रदर्शित किया गया। वन विभाग की इस झांकी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

क्षेत्रीय सशक्त समिति में सेवा निवृत अधिकारी डॉ. सुदेश वाघमरे का चयन

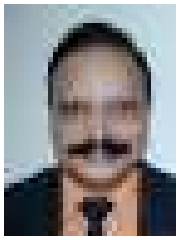

पर्यावरण, वन तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, पश्चिमी जोन, भोपाल के लिए क्षेत्रीय सशक्त समिति का पुनर्गठन किया गया है जिसमें वन विभाग के रिटायर्ड अधिकारी डॉ. सुदेश वाघमरे को अशासकीय सदस्य के रूप में नियुक्ति प्रदान की गई है।

अखिल भारतीय सिविल सर्विस प्रतियोगिता में वन कर्मी पुरस्कृत

मध्यप्रदेश वन विभाग के मानव संसाधन विभाग में कार्यरत् श्री अनूप वर्मा द्वारा पूना में दिनांक 26 से 28 फरवरी 2017 तक आयोजित अखिल भारतीय सिविल सर्विस प्रतियोगिता 2017 में शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता के 90 किलोग्राम वर्ग में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

अखबारों के आईने में

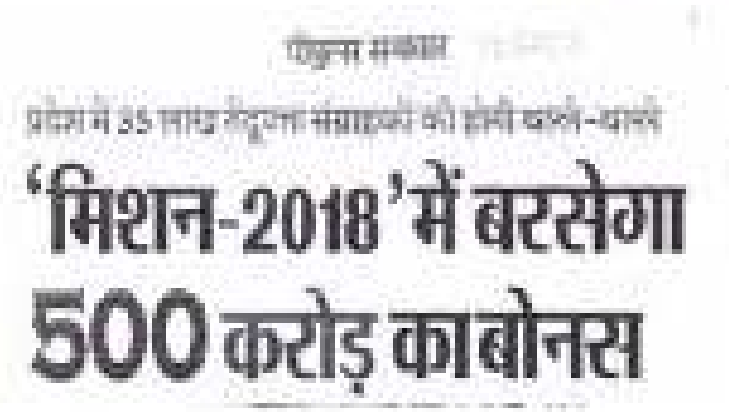

प्रदेश में 35 लाख तेंदूपत्ता संग्राहकों की होगी चांदी-चांदी

'मिशन-2018' में बरसेगा 500 करोड़ का बोनस

11 swamp deer shifted from Kanha to Satpura

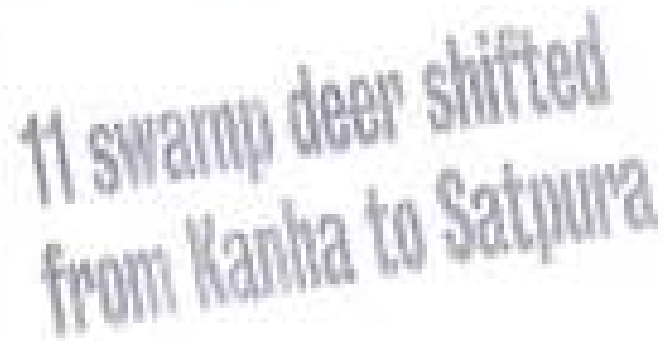

नदी संरक्षण...

जीवित घोषित हों नर्मदा सहित प्रदेश की नदियां

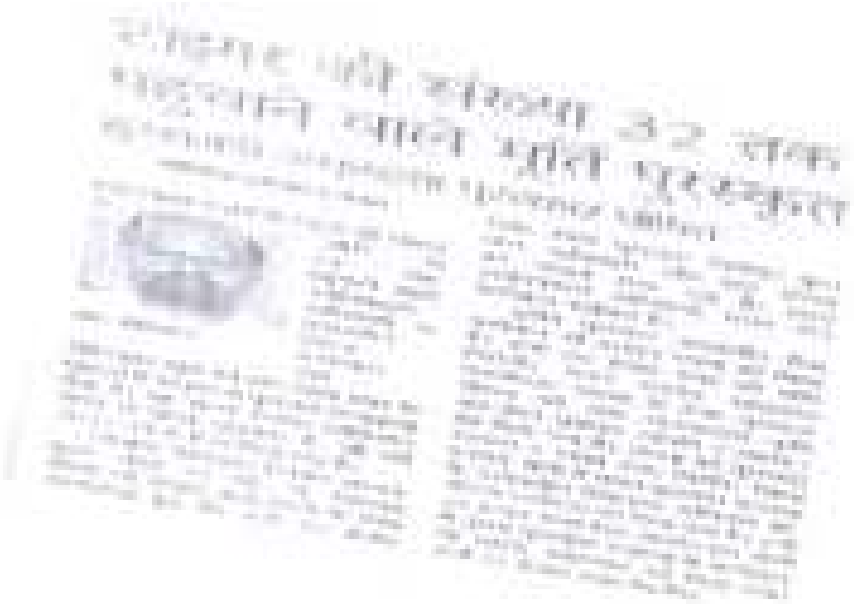

राजधानी — दैनिक भास्कर

अब किसानों की तंगी दूर करेगा बांस

नर्मदा की धारा अविरल बनाने लगेंगे 5 करोड़ पौधे

वन मंत्री डॉ. शेजवार ने बांटे राज्य स्तरीय जैव विविधता प्रतियोगिताओं के पुरस्कार

अखबारों के आईने में

महिला दिवस पर 16 महिला वनकर्मियों का सम्मान

प्रदेश के चार नेशनल पार्कों में की जाएगी तैनाती

अब शिकारियों का शिकार करेंगे फॉरेस्ट के बेल्जियम शेफर्ड डाग्स

वनविभाग की कार्यवाही से 50 हजार की सागौन जब्त

पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र मुकुन्दपुर सफारी

बजट अनुदानों पर चर्चा के जवाब में मंत्री गौरीशंकर शेजवार ने की घोषणा

भोपाल में खुलेगा नया जू, जिसमें होंगे मछली घर और तितली पार्क

अखबारों के आईने में

State doing very well in tiger conservation and protection

टाइगर रिजर्व कॉरिडोर में कैमरों से रहेगी बाघों पर नजर

पत्रिका 20 FEB 2017

टाइगर रिजर्व कॉरिडोर में कैमरों से रहेगी बाघों पर नजर

DB Post Anchor Forest department plans to relocate some tigers from Panna & Rani Durgawati Wildlife Reserve

Soon, new roars to echo in Nauradehi Wildlife Sanctuary

तेंदूपत्ता से भरेगा सरकारी खजाना

1200 करोड़ की होगी आय

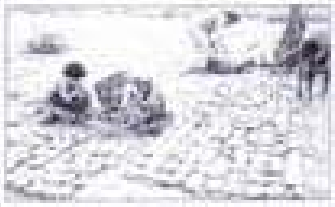

DB Post Anchor Batagur genus is one of the most endangered in IUCN red list

Slow & steady drive to save Batagur turtles

मुकुंदपुर जू में दहाड़ेगा दिल्ली का व्हाइट टाइगर

अखबारों के आईने में

Country's craftpersons showing their skill on bamboo work

A workshop on bamboo works is continued at Tribal Museum premises

निर्णय दीनदयाल वनांचल सेवा के तहत करेंगे सेवा कार्य

वनांचलों के लोगों को जागरूक करेगा वनविभाग

प्रदेश में विकसित होंगे पांच नए चिड़ियाघर

मध्यप्रदेश

ओंकारम्बर पाई-पाई जोड़ लगाए 40 लाख रुपए, रिटायरमेंट के दिन कर दिए दान

मध्यप्रदेश

नया जीवन देने की कला में मध्यप्रदेश आगे

वन्य प्राणियों के साथ ग्रामीणों की सेहत सुधरे

गुड न्यूज़

पांच साल में 2 से 10 का हुआ बाघों का कुनबा

केरवा क्षेत्र में घूम रहा बाघ शिफ्ट किया जाएगा

हरित साहित्य

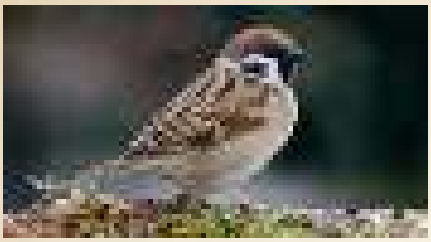

गौरैय्या

एक छोटी सी चिड़िया है
वो अपनी गौरैय्या है।
घर में यूँ आ जाती थी, जैसे घर का हिस्सा है
दाने यूँ चुग जाती थी, जैसे उस का हिस्सा है।
पास फुदक के आती थी, फिर फुर्र से उड़ जाती थी
नटखट यूँ बन जाती थी, जैसे छोटा बच्चा है।
खेती अब ज़हरीली है, हवा भी मैली मैली है
फिज़ा में ही खुदगर्ज़ी है, कहाँ कोई अब अपना है।
नन्ही सी वो जान है, ये उसका अपमान है
वो घर में कैसे आएगी, नहीं कोई जो रस्ता है।
अब घरों में सब कुछ होता है, पर सब कुछ सूना सूना है
एक एहसास सदा ये रहता है, कि रूठा कोई अपना है।
हम दाना ले के बैठे हैं, कि वो आएगी और खाएगी
उसके न आने से मानो, सब कुछ बिखरा बिखरा है।
गर प्यार से समझाएँ तो शायद वो आ जाएगी,
वरना बच्चे ये ही जानेंगें, कि गौरैय्या एक किस्सा है।
घर मे यूँ.....

एक छोटी सी चिड़िया है
वो अपनी गौरैय्या है।

शाहबाज़ अहमद
प्रधान मुख्य वन संरक्षक
(अनुसंधान, विस्तार एवं लोकवानिकी), म.प्र.

The World Sparrow Day is observed on the 20th of March. It speaks about the threats to the population of sparrows and aims to raise awareness on the issue.

चलें प्रकृति की ओर...

चलें प्रकृति की ओर रे! साथी, मानवता की ओर,
कुदरत के ऑचल में बैठें, करें खूब किलकोर।
000
हम पेड़ों पर चढ़े कि जैसे उछल-कूद बंदर करता,
हम अभिषेक करें पानी से, जैसे रोज समंदर करता।
सबका मन हर लेते पंछी, बन कर के चितचोर,
चलें प्रकृति की ओर रे! साथी....
000
धमा चौकड़ी हरणें करते, मस्ती भरी कुलांचै भरते,
सभी एक-दूजे का भोजन, सभी एक दूजे से डरते।
ये मनुष्य जीवों का दुष्मन, दोस्त कोई और,
चलें प्रकृति की ओर रे! साथी....
000
हरियाली मन को भाती है, खुशहाली देती है न्यौता,
ईष्वर की सृष्टि में जीवन, कोई बड़ा न कोई छोटा।
धरती के आंचल की मैली करे न चादर कोई कोर,
चलें प्रकृति की ओर रे! साथी....
मरूथल में तब्दील हो रही है जो हरियाली,
उसे बचाओ आने वाले युग के तुम माली।
इतनी हो हरियाली जिसका मिले ओर न छोर,
चलें प्रकृति की ओर रे! साथी....

डॉ. जगदीश प्रसाद रावत
प्रबंधक (सी. एण्ड. डी.)
मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड भोपाल

Ecotourism

एडवेंचर स्पोर्ट्स एवं मनोरंजन का अद्वितीय स्थल
धोलावाड़ ईको टूरिज्म पार्क रतलाम

माननीय मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन द्वारा निर्धारित 11 प्राथमिकताओं में पर्यटन क्षेत्र में विकास एवं उसके माध्यम से स्थानीय नागरिकों को रोजगार उपलब्ध कराना शामिल किया गया है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में रतलाम पर्यटन विकास परिषद एवं वन विभाग रतलाम द्वारा संयुक्त प्रयास से धोलावाड़ डैम क्षेत्र में ''ईको टूरिज्म पार्क'' विकसित किया गया है। इस पार्क में आईलैंड टेंट कैंपिंग, ट्रेकिंग, बर्डवाचिंग, माउन्टेन बाईकिंग, आर्चेरी, रिवर व वैली क्रासिंग, मंकी क्रॉल, पेंटबॉल, स्पीड बोटिंग, वाटर स्कूटर, चप्पू बोटिंग, डाल्फिन राईड, टेलीस्कोप स्टार गेजिंग एवं अन्य साहसिक खेल व गतिविधियां संचालित की जा रही है। इस पार्क में कुल 21 प्रकार की गतिविधियां संचालित की जा रही है, जो कि पार्क को अन्य ईको पर्यटन स्थलों से भिन्न बनाती हैं, क्योंकि किसी अन्य स्थल पर ये सभी गतिविधियां एक साथ संचालित नही की जाती है। पार्क की सभी गतिविधियों का संचालन संबंधित क्षेत्र की पाँच वन समितियों के 61 सदस्यों द्वारा किया जा रहा है। इस पार्क की शुरूआत दिनांक 10 व 11 मार्च 2017 को धोलावाड़ ईको टूरिज्म फेस्टिवल के अवसर पर किया गया।

मढ़ई का नया आकर्षण

मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड द्वारा 12 सीटर FRP बोट सतपुड़ा टाइगर रिजर्व, होशंगाबाद को ईको पर्यटन गतिविधियों हेतु प्रदाय की गयी हैं। इस बोट का जलावतण श्री दीपक खाण्डेकर, अपर मुख्य सचिव, म.प्र.शासन वन विभाग द्वारा दिनांक 12 मार्च 2017 को सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के प्रवेश द्वार मढ़ई में किया गया।

श्री दीपक खाण्डेकर (अपर मुख्य सचिव, वन) के द्वारा
Fibre Reinforced Plastic बोट का जलावतरण

New Ecotourism Site near Mhow

In March 2017, an all season ecotourism camping site has been started by the Madhya Pradesh Ecotourism Development Board in Janapav near Mhow.

Madhya Pradesh to be the new attraction for Bikers

Madhya Pradesh Ecotourism Development Board has recently tied up with a biking group called 'Meanders' based at Bhopal. The vision behind the tie up is to take biking groups to the various ecotourism destinations in Madhya Pradesh.

To start with, a group of twelve bikers did a two day biking trip to the recreational area of Kukru (Betul) from 18th to 20th of March 2017, where the local samiti facilitated them with logistic and sight seeing. Madhya Pradesh Ecotourism Development Board is planning to cover the whole of Madhya Pradesh to promote ecotourism in the State and to motivate the local communities to be a part of the ecotourism activities and thus generating employement opportunities for them.

वनक्षेत्र में रॉक पेंटिंग शेल्टर

भीमबैठका के शैलाश्रय तथा उनमें उपलब्ध शैलचित्रों की खोज का श्रेय डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकरजी को जाता है। तब से आज तक पुरातत्व से संबंधित अनेक संस्थानों ने यहाँ अन्वेषण तथा उत्खनन कार्य किया है, जिससे आदि मानव के विषय में कई गूढ़ तथ्य प्रकाश में आयें हैं। अभी तक संपादित अन्वेषणों के द्वारा भीमबैठका तथा इससे लगी पहाड़ियों से 500 से भी अधिक शैलाश्रयों का पता चला है, जिनमें शैलचित्र मौजूद हैं। सम्भवत: भीमबैठका के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान से इतनी बड़ी संख्या में शैलचित्र अभी तक ज्ञात नहीं हैं। इस क्षेत्र के विषय में एक अन्य बात जो अत्याधिक महत्वपूर्ण है वह है यहां से प्राप्त प्रागैतिहासिक अवशेष जो मानव की प्रारंभ से लेकर लगभग 300 ई. तक की अविरल कहानी संजोए है।

शैलचित्र कला का इतिहास

शैलचित्र कला का इतिहास अत्यन्त रौचक है। भारत के अतिरिक्त अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, फ्रांस, स्पेन, आस्ट्रेलिया इत्यादि ऐसे कई देश हैं, जहां चित्र शैलाश्रय व गुफाएं देखी जा सकती हैं। फ्रांस तथा स्पेन चित्रित गुफाओं के लिये संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध हैं।

शैलाश्रय व शैलचित्र

भीमबैठका व उसके आस-पास के क्षेत्र में आदिमानव का निवास पूर्व पाषाण काल अर्थात आज से लगभग 6 से 8 लाख वर्ष पूर्व माना गया है, परंतु शैलचित्रों का प्रारंभ उत्तर पाषाण काल या मध्याश्म काल (लगभग 10,000 वर्ष पूर्व से माना गया है। जिनका क्रम लगातार मध्य युग तक चलता है।

शैलाश्रय के विषयों का वर्गीकरण

आखेट दृश्य
युद्ध दृश्य
पशु-पक्षी तथा जलचर
व्यक्ति चित्र
नृत्य और आलेखन
धार्मिक चित्र
अभिलेख

शैलचित्रों का समय एवं काल निर्धारण

उत्तर पुरा पाषाण युग
मध्याश्म युग
ताम्राश्म व नूतन पाषाण युग
ऐतिहासिक
मध्यकालीन युग

मध्यप्रदेश में शैलचित्रों के प्रमुख केन्द्र

मध्यप्रदेश के 34 जिले ऐसे हैं जिनमें शैलचित्रों की खोज की गई है। इनमें प्रमुख जिले रायसेन, भोपाल, विदिशा, सीहोर, कटनी, रीवा, होशंगाबाद इत्यादि हैं।

भोपाल के आस-पास वनक्षेत्रों में सर्वाधिक शैलचित्र वाले स्थान

रायसेन रोड

1. समर्धा (लगभग 30 रॉकशेल्टर)
2. सतकुण्डा (लगभग 15 रॉकशेल्टर)
3. खरबई (लगभग 40 रॉकशेल्टर)
4. रामछज्जा (लगभग 20 रॉकशेल्टर)

कोलार रोड

1. दौलतपुर (लगभग 2 रॉकशेल्टर, 70 फीट की रॉकशेल्टर)
2. कठौतिया (लगभग 70 रॉकशेल्टर)
3. झिरी (लगभग 20 रॉकशेल्टर)
4. जावरा (लगभग 20 रॉकशेल्टर)

विदिशा रोड

1. दीवानगंज (लगभग 5 रॉकशेल्टर)
2. नागौरी और सांची (लगभग 20 रॉकशेल्टर)
3. सतधारा (लगभग 5 रॉकशेल्टर)

पर्यटकों का आवागमन

इन क्षेत्रों में विगत 7 वर्षों से देशी-विदेशी पर्यटक आ रहे हैं, यद्यपि उनकी संख्या काफी कम है पर प्रतिवर्ष स्पेन की "EL Centre d'Estudis Contestans" (म्यूजियम एंड रिसर्च सेंटर) से 10 से 12 लोग हर वर्ष कठौतिया एवं समर्धा रॉक पेंटिंग शेल्टर का अध्ययन करने नियमित रूप से आते हैं व मध्यपदेश ईकोपर्यटन बोर्ड के माध्यम से स्वसहायता समूह उनके खान-पान व भ्रमण की व्यवस्था सुनिश्चित करते हैं। विगत 6 वर्षों में लगभग 40 से 70 विदेशी पर्यटक इन क्षेत्रों में आ चुकें हैं।

"The book of nature has no beginning, as it has no end. Open this book where you will, and at any period of your life, and if you have the desire to acquire knowledge you will find it of intense interest, and no matter how long or how intently you study the pages, your interest will not flag, for in nature there is no finality."

— Jim Corbett

"A people without children would face a hopeless future; a country without trees is almost as hopeless. "

-Theodore Roosevelt(1858-1919),
26th President of the
United States

Promotions and Retirements

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नती (जनवरी–मार्च)

क्र.	अधिकारी का नाम	पदोन्नती उपरांत नवीन पदस्थिति
1	श्री ललित मोहन बेलवाल	प्रधान मुख्य वन संरक्षक, प्रोजेक्ट कार्डीनेटर, रूरल लाईवलीहुड, भोपाल
3	श्री राकेश कुमार यादव	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, आर.सी.व्ही. नरोन्हा प्रशासन अकादमी, भोपाल, सामान्य प्रशासन विभाग (प्रतिनियुक्ति)
4	श्री अमिताभ अग्निहोत्री	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, डायरेक्टर नेशनल ज्यूलॉजिकल पार्क पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली (प्रतिनियुक्ति)
5	श्री रमेश कुमार श्रीवास्तव	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, प्रमुख सलाहकार मध्यप्रदेश राज्य योजना आयोग, (प्रतिनियुक्ति)
6	श्री कमलेश चतुर्वेदी	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, समन्वय, कार्यालय प्र.मु.व.सं, वन बल प्रमुख, भोपाल
7	डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव	संचालक, राजीव गांधी जल ग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग (प्रतिनियुक्ति)
8	श्री अशोक कुमार सिंह	मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना, होशंगाबाद
9	श्री आर.एस अलावा	मुख्य वन संरक्षक, बैतूल वृत्त
10	श्री केशव सिंह	मुख्य वन संरक्षक, (प्रशासन–1), कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन बल प्रमुख, भोपाल
11	श्री के.पी. शर्मा	मुख्य वन संरक्षक, कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन बल प्रमुख, भोपाल
12	श्री डी.के. अग्रवाल	मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना, शिवपुरी
13	श्री अमित कुमार दुबे	वन संरक्षक, कार्य आयोजना, ग्वालियर
14	श्री प्रभात कुमार वर्मा	वन संरक्षक, कार्य आयोजना, भोपाल
15	श्री नारेन्द्र कुमार सनोड़िया	वन संरक्षक, नरसिंहपुर (सा.) वनमण्डल
16	श्री वाय.पी. सिंह	वन संरक्षक, धार (सा.) वनमण्डल
17	श्री चौक सिंह निनामा	वन संरक्षक, श्योपुर (सा.) वनमण्डल
18	श्री डी.सी. केनश	वन संरक्षक, राजगढ़ (सा.) वनमण्डल

भारतीय वन सेवा के अधिकारी जो सेवानिवृत्त हुए (जनवरी–मार्च)

1. श्री प्रवीण कुमार चौधरी, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कैम्पा
2. श्री आजाद सिंह डबास, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक म.प्र. लघु वनोपज संघ
3. श्री अनिल कुमार उपाध्याय, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, विक्रय अधिकारी, डिपो, नई दिल्ली
4. श्री एस. सी. सिंहल, मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना, बैतूल

Feedback, suggestions and contributions are welcome at dcfpracharprasar@mp.gov.in